मेरा नया बचपन

सुभद्रा कुमारी चौहान

कवि परिचय :

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1903 ई. में नागपंचमी के दिन प्रयाग निहलपुर मुहल में हुआ । उनके पिता थे ठाकुर रामनाथ सिंह । उनकी देखरेख में सुभद्राकुमारी की प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में हुई । सन् 1919 ई. में खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से उनका विवाह हुआ था । राष्ट्रीय आन्दोलन में उद्‌बोधित होकर सुभद्राकुमारी अपने पति के साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेने लगीं । इसलिए कई बार उन्हें जेल जाना पड़ा । देश स्वतंत्र होने के बाद वे मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्या चुनी गईं । साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उन्हें राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी से विशेष प्रोत्साहन मिला था । 12 फरवरी 1948 ई. को मोटर दुर्घटना से उनका देहांत हो गया ।

सुभद्राकुमारी कवयित्री और कहानीकार-दोनों ही थीं । अपनी कविता में राष्ट्रप्रेम की ओजस्विता और मानवीय भावनाओं का सहज रूप बड़ी ही सुन्दरता के साथ व्यक्त होता है । 'झाँसी की रानी' कविता किसी समय हिन्दी पाठकों की जवानों पर गुँजती रहती थी । इनकी रचनाएँ मुकुल, बिखरे, मोती, उन्मादिनी, त्रिधाराएँ, सभा का खेल और 'सीधे-साधे चित्र' हैं । इनमें 'मुकुल' उनकी 39 कविताओं का संग्रह है । इसी कविता- पुस्तक पर उन्हें पुरस्कार मिला है ।

भाव-बोध :

'मेरा नया बचपन' कविता चौहानजी के बचपन-संबंधी मनोभावों की एक झलक है । राष्ट्रीय कविताओं के अतिरिक्त सुभद्रा की वात्सल्य संबंधी कुछ कविताएँ भी अपनी स्वाभाविकता में अप्रतिम हैं । 'मेरा नया बचपन' कविता में कवयित्री ने अपने बचपन की

याद की है । इसमें उनका मातृहृदय सजग हो उठा है । बचपन की सरल, मधुर स्मृतियाँ आनन्द का अतुलित भंडार होती हैं । कवयित्री ने अपनी बिटिया के बचपन की अठखेलियों और शरारतों में अपने ही बचपन की झलक देखी । उन्हें लगा कि उनका बचपन फिर से लौट आया है । वस्तुतः नारी-हृदय मातृत्व पाकर ही गौरवान्वित होता है । सुभद्राजी पूर्ण माता हैं ।

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी,
गया, ले गया तू, जीवन की,
सबसे मस्त खुशी मेरी ।

चिंता रहित खेलना खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है,
बचपन का अतुलित आनंद ।

रोना और मचल जाना भी,
क्या आनंद दिखलाते थे,
बड़े-बड़े मोती-से आँसू,
जयमाला पहनाते थे ।

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया,
झाड़-पोंछकर चूम-चूमकर,
गीले गालों को सुखा दिया ।

आ जा बचपन ! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शांति,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृत विश्रांति ।

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप,
क्या फिर आकर मिटा सकेगा
तू मेरे मन का संताप ?

मैं बचपन को बुला रही थी,
बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन-वन-सी फूल उठी,
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ।

माँ ओ ! कहकर बुला रही थी,
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में,
मुझे खिलाने आई थी ।

मैंने पूछा-यह क्या लाई ?
बोल उठी वह - माँ खाओ,
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से,
मैंने कहा - तुम ही खाओ ।

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्त्ति देखकर,
मुझमें नव-जीवन आया ।

मैं भी उसके साथ खेलती,
खाती हूँ, तुतलाती हूँ,
मिलकर उसके साथ स्वयं,
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ ।

जिसे खोजती थी बरसों से,
अब जाकर उसको पाया,
भाग गया था मुझे छोड़कर,
वह बचपन फिर से आया ।

शब्दार्थ

याद - स्मरण । मस्त - प्रसन्न, आनंदित । निर्भय - बिना डर के । चिंता रहित - चिंता शून्य । स्वच्छंद- आज़ाद, स्वाधीन, स्वतंत्र । अतुलित - अतुलनीय, अपार, बेजोड़ । मचल जाना - आग्रह, हठ करना । आँसू - अश्रु । गीला - भीगा हुआ । व्याकुल - बेचैन । प्राकृत विश्रांति - स्वाभाविक सुख चैन । निष्पाप - पापरहित, निष्कलंक । संताप - गहरी पीड़ा, दुःख । नंदनवन - देवताओं का वन । कुटिया - कुटीर, झोंपड़ी । मिट्टी - धूलि, भस्म । प्रफुल्लित - बहुत खुश, प्रसन्न । मंजुल - सुन्दर, मन को लुभानेवाली । नव-जीवन - नया जीवन । तुतलाना - तुतलाकर बोलना । स्वयं - खुद । बरसों - सालों ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कवयित्री ने बचपन को 'अतुलित आनंद देनेवाले' क्यों कहा है ?

(ख) बचपन के बारे में कवयित्री ने क्या वर्णन किया है ?

(ग) बच्ची के रोने पर माँ ने उसे कैसे चुप कराया ?

(घ) कवयित्री बचपन को क्यों बार-बार बुलाती हैं ?

(ङ) बचपन को बुलाते समय क्या हुआ ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) 'मेरा नया बचपन' कविता किसने लिखी है ?

(ख) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?

(ग) किस समय का अतुलित आनंद भूला नहीं जा सकता है ?

(घ) कवयित्री को बचपन में किस प्रकार की जयमाला पहनाते थे ?

(ङ) माँ ने गीले गालों को कैसे सुखा दिया ?

(च) कवयित्री किसलिए बचपन को फिर एक बार बुलाती है ?

(छ) कवयित्री किसलिए शंका प्रकट करती है ?

(ज) कवयित्री की छोटी-सी कुटिया कैसे नन्दन वन-सी फूल उठी ?

(झ) कवयित्री की बिटिया क्यों माँ के पास आई थी ?

(ञ) कवयित्री ने अपना खोया बचपन किस प्रकार पाया ?

(ट) कवयित्री किसे बरसों से खोजती थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(क) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?

(i) बुढ़ापा

(ii) बचपन

(iii) शैशव

(iv) यौवन

(ख) बचपन का कौन-सा आनंद भुला नहीं जा सकता ?

(i) सुख

(ii) अप्रतिम

(iii) अतुलित

(iv) असीम

(ग) जब बच्ची रोती थी तब कौन काम छोड़कर आ जाती थी ?

(i) माँ

(ii) बहन

(iii) नानी

(iv) आया

(घ) बिटिया क्या खाकर आई थी ?

(i) रोटी

(ii) पान

(iii) मिट्टी

(iv) मिठाई

(ङ) बचपन क्या बनकर कवयित्री को फिर से प्राप्त हुआ ?

(i) बिल्ली

(ii) कुत्ता

(iii) बेटा

(iv) बेटी

भाषा - ज्ञान

1. इन विशेषण तथा संज्ञा शब्दों को जोड़िए :

विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा
मधुर	विश्रान्ति	मस्त	कुटिया
व्याकुल	आँसू	मंजुल	खुशी
मोती-से	हृदय	छोटी-सी	आनंद
प्राकृत	स्मृति	अतुलित	मूर्त्ति

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

खुशी, हँसना, मधुर, जीवन, निश्चित, निर्भय, बड़े, सूखा, भयभीत, कुटिया, नव, प्यारा, पाप, निष्पाप, सरलता, बचपन, निर्मल, अपना, पाया, हर्ष ।

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

निर्भय, स्वच्छन्द, जय, माँ, व्यथा, फूल, कुटिया, वन

4. निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए ।

(क) तू गया, तू ले गया । (भविष्यत काल में)

(ख) मेरे मन का दु:ख वह आकर मिटाएगा । (भूतकाल में)

(ग) माँ काम छोड़कर आई और मुझे गोद में उठा लिया । (वर्त्तमान काल में)

(घ) मैं बचपन को बुला रही थी । (वर्तमान काल में)

(ङ) मुझे खिलाने आई थी । (भविष्यत काल में)

गृहकार्य :

अपने बचपन की किसी एक रोचक घटना अपने साथियों को सुनाइए ।

●